



सामान्य ज्ञान

IAS, PCS, NDA, CDS, CAPF, SSC, CPO, Railway, Banking इत्यादि
एकदिवसीय परीक्षाओं के लिये उपयोगी

—| नवीन संस्करण |—

GK



- भारतीय इतिहास
- कला एवं संस्कृति
- भारत एवं विश्व का भूगोल
- पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी
- भारतीय राजव्यवस्था
- भारतीय अर्थव्यवस्था
- भौतिक विज्ञान
- रसायन विज्ञान
- जीव विज्ञान
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- कम्प्यूटर
- कृषि एवं पशुपालन
- अंतर्राष्ट्रीय संगठन
- खेलकूद
- विविध



Think IAS Think Drishti

अब घर बैठे कीजिये
आई.ए.एस. की तैयारी
क्योंकि हम आ रहे हैं
आपके घर

आई.ए.एस. प्रिलिम्स ऑनलाइन कोर्स (IAS Prelims Online Course)

प्रिय विद्यार्थियों,

संसाधन की कमी अक्सर हमारी उड़ान को सीमित कर देती है। हममें आगे बढ़ने की तड़प तो खूब होती है किंतु उसे साकार करने वाले साधनों का अभाव हमें मायूस कर देता है। पिछले कुछ समय से देश के विभिन्न हिस्सों से आप जैसे हज़ारों विद्यार्थियों ने हमें इस आशय के संदेश भेजे कि वो सिविल सेवा में जाने की इच्छा तो रखते हैं किंतु इसकी तैयारी के लिये दिल्ली में रहने का भारी-भरकम खर्च उठा पाना उनके लिये संभव नहीं है। साथ ही आपने हमसे यह अपेक्षा भी व्यक्त की कि हम ऐसी कोई व्यवस्था करें जिसमें आप घर-बैठे दृष्टि की कक्षा कार्यक्रम जैसी गुणवत्तापरक क्लास कर पाएँ। आपके इन्हीं निवेदनों को ध्यान में रखते हुए हम अपना पहला 'पेन ड्राइव कोर्स' जारी कर रहे हैं जो आई.ए.एस. प्रिलिम्स के पाठ्यक्रम पर केंद्रित है। इसमें आप सामान्य अध्ययन तथा सीसेट के कोर्स ले सकते हैं। लगभग 2 वर्षों की कठोर मेहनत से तैयार हुआ यह वीडियो कोर्स गुणवत्ता में अच्छे से अच्छे क्लासरूम प्रोग्राम को टक्कर दे सकता है। हमें विश्वास है कि यह कोर्स उस अंतराल को भरने में सफल होगा जो दिल्ली में रहकर तैयारी करने वाले और दिल्ली नहीं आ पाने वाले विद्यार्थियों के बीच बना रहता है। निकट भविष्य में हम IAS मुख्य परीक्षा और विभिन्न राज्यों की PCS परीक्षाओं के लिये भी ऑनलाइन कोर्स शुरू करेंगे।

एडमिशन प्रारंभ

विद्यार्थियों की भारी मांग को देखते हुए ऑनलाइन पेन ड्राइव कोर्स
पर 20% की विशेष छूट अब शुरुआती 1000 विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध

मोड : पेन ड्राइव

कक्षाओं की गुणवत्ता को परखने के लिये डेमो
वीडियोज़ हमारे यूट्यूब चैनल **Drishti IAS**
की प्लेलिस्ट **Online Courses** में देखें



ऑनलाइन कोर्स से जुड़ी हर जानकारी के लिये
हमारी वेबसाइट **www.drishtiias.com**
पर **FAQs** पेज देखें



IAS प्रिलिम्स ऑनलाइन कोर्स की विशेषताएँ

- 500+ घंटे की सामान्य अध्ययन की कक्षाएँ।
- 120+ घंटे की सीसेट की कक्षाएँ।
- प्रत्येक कक्षा को 3 बार देखने की सुविधा ताकि आप रिवीज़न भी कर सकें।
- कक्षाओं में डिजिटल बोर्ड का इस्तेमाल। इमेज, वीडियो आदि की मदद से कठिन विषय समझाने की शैली।
- हर क्लास के अंत में उस टॉपिक से IAS में पूछे गए और अन्य संभावित प्रश्नों का अभ्यास।
- स्टेट-ऑफ-द-आर्ट कैमरा और साउंड क्वालिटी जो क्लास के अनुभव को एकदम वास्तविक जैसा बनाती है।
- प्रिलिम्स के ठीक पहले करेंट अफेयर्स की 30 ऑनलाइन कक्षाएँ (निशुल्क)।
- ऑनलाइन प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़ (25+5 टेस्ट) की निशुल्क सुविधा।
- क्विक बुक सीरीज़ की 8 पुस्तकें निशुल्क, जिनके अलावा कोई और स्टडी मैटीरियल पढ़ने की ज़रूरत नहीं।
- इस कोर्स को करने के बाद अगर आप दृष्टि की किसी भी शाखा में सामान्य अध्ययन (फाउंडेशन कोर्स) करते हैं तो आपकी ऑनलाइन कोर्स की फीस की 50% राशि की छूट दी जाएगी।

जानकारी के लिये कॉल करें- 9319290700, 9319290701, 9319290702, या सिर्फ़ मिस्ड कॉल करें- 8010600300

दिल्ली शाखा का पता : 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09

प्रयागराज शाखा का पता : ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज

Ph.: 8448485517, 8448485519, 87501 87501, 011-47532596



सामान्य ज्ञान



दृष्टि पब्लिकेशन्स

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Website:

www.drishtipublications.com, www.drishtiias.com

E-mail :

info@drishtipublications.com

तृतीय संस्करण- अक्टूबर 2019

पुनर्मुद्रण- फरवरी 2020

मूल्य : ₹ 230

प्रकाशक

दृष्टि पब्लिकेशन्स,

(A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.)

641, प्रथम तल,

डॉ. मुखर्जी नगर,

दिल्ली-110009

विधिक घोषणाएँ

- ★ इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये जिम्मेदार नहीं है।
- ★ हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- ★ सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- ★ © **कॉपीराइट**: दृष्टि पब्लिकेशन्स (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।
- ★ एम.पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेज़-2, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

प्रिय पाठको,

किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के लिये कठोर परिश्रम, अनुशासन, उत्कृष्ट अध्ययन सामग्रियों का चयन व पठन और लक्ष्य के प्रति सही रणनीति आवश्यक शर्तें होती हैं। जो अभ्यर्थी इन आवश्यक शर्तों को संतुलित तरीके से साध लेता है वह सफलता सूची में अपना नाम अंकित करवा लेता है। सामान्यतः सफल विद्यार्थियों की सूची में हिन्दी माध्यम के अभ्यर्थियों की संख्या अंग्रेजी माध्यम के अभ्यर्थियों की अपेक्षा कम रहती है। इसका एक प्रमुख कारण हिन्दी में स्तरीय एवं विश्वसनीय अध्ययन सामग्रियों का अभाव होना है। हिन्दी माध्यम के अभ्यर्थियों की इस गंभीर समस्या का उचित समाधान किया जा सके, इसी उद्देश्य के साथ दृष्टि पब्लिकेशन्स की स्थापना की गई है। ध्यातव्य है कि 'दृष्टि पब्लिकेशन्स' की स्थापना के समय से ही यह बात हमारे चेहन में थी कि 'सामान्य ज्ञान' (G.K.) के लिये 350-400 पृष्ठों की एक ऐसी पुस्तक होनी चाहिये जो समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं (IAS, PCS सहित NDA, CDS, CAPF, Banking, SSC, Railway इत्यादि) के लिये उपयोगी साबित हो सके। अपने इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर 2017 में हमने एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित की जो गुणवत्ता में अंग्रेजी की किसी भी पुस्तक से कमतर नहीं है। इसमें हमने पिछले संस्करण में हुई छोटी-मोटी गलतियों को सुधार दिया है तथा पाठ्य सामग्री को अद्यतन भी बनाया है जिससे यह पुस्तक आगामी परीक्षाओं के लिये और भी उपयोगी बन गई है।

पुस्तक लेखन से पूर्व हमने बाज़ार में उपलब्ध सामान्य ज्ञान की लगभग सभी पुस्तकों का अवलोकन किया। जिसमें हमने यह पाया कि हिन्दी में सामान्य ज्ञान से संबंधित पुस्तकों की कोई कमी नहीं है, लेकिन 'कॉपी-पेस्ट' पद्धति पर लिखी गई इन पुस्तकों में न केवल अत्यधिक अशुद्धियाँ हैं वरन अद्यतनता (Updation) का भी अभाव है। निःसंदेह गैर-परीक्षोपयोगी तथ्यों से युक्त इन पुस्तकों की स्तरहीनता का खामियाजा अंततः इनके पाठकों को ही भुगतना पड़ता है, परिणामस्वरूप अभ्यर्थियों के समक्ष विकल्पहीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

इसी विकल्पहीनता को खत्म करने की कठिन चुनौती हमारी 15 सदस्यीय कुशल टीम ने स्वीकार की। विभिन्न परीक्षाओं का सुदीर्घ अनुभव रखने वाले इस टीम के सभी सदस्यों ने दिन-रात एक करके इस महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम तक पहुँचाया।

जब आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो पाएंगे कि इसके प्रत्येक खंड में तथ्यों को सहज एवं सरल भाषा में समझाते हुए लिखा गया है, ताकि उन्हें आसानी से आत्मसात् किया जा सके। पुस्तक लिखने के क्रम में किये गए शोध में हमने पाया कि बदलती परीक्षा पद्धति में पर्यावरण, कृषि एवं पशुपालन, कला एवं संस्कृति तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे विषयों का महत्त्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है, लेकिन बाज़ार में उपलब्ध परंपरागत तरीके से लिखी गई सामान्य ज्ञान की पुस्तकों में या तो ये विषय अनुपस्थित हैं या अव्यवस्थित तरीके से दिये गए हैं, इसलिये इन विषयों को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करना हमारी प्राथमिकताओं में शामिल था और हमें खुशी है कि हम ऐसा कर पाने में सफल रहे हैं।

परीक्षार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में कंप्यूटर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जैसे विषयों के जटिल तकनीकी शब्दों को अंग्रेजी में भी दिया गया है। इन विषयों को समझने में मानविकी के विद्यार्थियों को कोई परेशानी न हो, इसके लिये चित्रों एवं फ्लोचार्ट का भी समुचित प्रयोग किया गया है। पुस्तक को त्रुटिरहित एवं प्रामाणिक बनाने के लिये इसका कई चरणों में सूक्ष्म निरीक्षण किया गया एवं किसी विवाद की स्थिति में एन.सी.ई.आर.टी. जैसी प्रामाणिक पुस्तकों को ही आधार बनाया गया है। अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न भी दिये गए हैं, ताकि अभ्यर्थी परीक्षा से पूर्व स्वमूल्यांकन भी कर सकें। अपने ईमानदारीपूर्ण प्रयासों एवं पुस्तक में सम्मिलित उत्कृष्ट एवं परीक्षोपयोगी अध्ययन सामग्री के आधार पर हम पूरे दावे के साथ कह सकते हैं कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के लिये 'सामान्य ज्ञान' पुस्तक 'मील का पत्थर' साबित होगी।

हमें भरोसा है कि यह पुस्तक आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेगी। मेरा निवेदन है कि आप इस पुस्तक को पाठक के साथ-साथ आलोचक की नजर से भी पढ़ें। अगर आपको कोई भी कमी दिखे तो बेझिझक 8130392355 नंबर पर वाट्सएप मैसेज से भेज दें। आपकी टिप्पणियों और सुझावों के आधार पर ही हम इन पुस्तकों को और सुरुचिकर व प्रामाणिक बना सकेंगे।

साभार,
प्रधान संपादक
दृष्टि पब्लिकेशन्स

अनुक्रम

इतिहास (1-65) प्राचीन भारत: 1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत, 2. प्रागैतिहासिक काल, 3. हड़प्पा सभ्यता, 4. वैदिक संस्कृति, 5. छठी शताब्दी ई.पू. के धार्मिक आंदोलन, 6. महाजनपद काल, 7. मगध साम्राज्य, 8. विदेशी आक्रमण, 9. मौर्य साम्राज्य, 10. मौर्योत्तर काल, 11. विदेशी शासन, 12. गुप्त साम्राज्य, 13. संगम युग, 14. वाकाटक, बादामी के चालुक्य, पल्लव वंश इत्यादि

मध्यकालीन भारत: 1. मध्यकालीन भारत के राजवंश (पाल, सेन, गुर्जर, प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चोल इत्यादि), 2. अरब एवं तुर्क आक्रमण, महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, 3. गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद एवं लोदी वंश, 4. दिल्ली सल्तनत का प्रशासन, 5. सल्तनत काल में तकनीक विकास, 6. क्षेत्रीय राज्य (विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य इत्यादि), 7. सूफी तथा भक्ति आंदोलन, 8. मुगलकाल, 9. मुगल शासन व्यवस्था, 10. मराठा (शिवाजी), 11. सिख संप्रदाय के गुरु, 12. महत्त्वपूर्ण शब्दावली 13. मध्यकालीन पुस्तकें

आधुनिक भारत: 1. उत्तरवर्ती मुगल साम्राज्य, 2. मराठा (पेशवा) 3. कर्नाटक युद्ध, 4. अंग्रेजों की आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक नीतियाँ, 5. समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ, 6. सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन, 7. 1857 का विद्रोह, 8. नागरिक एवं आदिवासी विद्रोह, 9. किसान सभा, मजदूर एवं वामपंथी आंदोलन, 10. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, 11. मुस्लिम लीग, 12. क्रांतिकारी गतिविधियाँ, 13. होमरूल लीग, 14. गांधीवादी चरण, खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन, 15. साइमन कमीशन, नेहरू रिपोर्ट, 16. सविनय अवज्ञा-आंदोलन, गांधी इरविन समझौता, 17. गोलमेज सम्मेलन, 18. प्रांतीय चुनाव, 19. क्रिप्स मिशन और भारत छोड़ो आंदोलन, 20. वेवेल योजना तथा शिमला सम्मेलन, 21. कैबिनेट मिशन, संविधान सभा एवं अंतरिम सरकार, 22. माउंट बेटन योजना, भारत में संवैधानिक विकास क्रम, 23. गवर्नर जनरल एवं उनके कार्य, 24. अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य

कला एवं संस्कृति: 1. बौद्ध कला, 2. मंदिर निर्माण की शैली, 3. इंडो-इस्लामिक वास्तुकला, 4. मुगलकालीन स्थापत्य, 5. विश्व विरासत में शामिल भारतीय स्थल, 6. मूर्तिकला, 7. चित्रकला, 8. नृत्यकला एवं संगीतकला, 9. भारतीय परंपरागत युद्धकला एवं खेल, 10. प्रमुख त्योहार, 11. शास्त्रीय भाषाएँ, 12. प्रमुख दर्शन एवं दार्शनिक, 13. कला एवं संस्कृति से संबंधित संगठन, 14. अभ्यास प्रश्न

भारतीय राजव्यवस्था (66-109) 1. भारतीय संविधान, 2. संघ एवं राज्य क्षेत्र, 3. नागरिकता, 4. मूल अधिकार, 5. नीति निर्देशक तत्व एवं मूल कर्तव्य, 6. राष्ट्रपति, 7. मंत्रिपरिषद्, 8. राज्यसभा और लोकसभा, 9. राज्यपाल एवं राज्य की मंत्रिपरिषद्, 10. केंद्र-राज्य संबंध, 11. न्यायपालिका, 12. पंचायती राज, 13. महत्त्वपूर्ण संविधान संशोधन, 14. प्रमुख संवैधानिक संस्थाएँ, 15. अन्य संस्थाएँ एवं आयोग, 16. भारतीय संविधान के भाग, अनुच्छेद एवं अनुसूचियाँ (संक्षिप्त में), 17. अभ्यास प्रश्न

भूगोल (110-170) विश्व का भूगोल: 1. परिचय (ब्रह्मांड, आकाशगंगा, तारे, सौरमंडल इत्यादि), 2. महाद्वीपों एवं महासागरों की उत्पत्ति, 3. अक्षांश एवं देशांतर रेखाएँ, 4. भू-आकृति विज्ञान, भूकंप एवं ज्वालामुखी, 5. प्रमुख पर्वत शृंखलाएँ, पठार, मरुस्थल तथा मैदान, 6. जलवायु विज्ञान, 7. पवन, जेट स्ट्रीम, स्थानीय पवनें, 8. समुद्र विज्ञान, 9. प्रमुख जनजातियाँ एवं उनके आवास, 10. महाद्वीप (एशिया, अफ्रीका तथा अन्य), 11. विश्व की प्रमुख झीलें, नहरें, औद्योगिक केंद्र, शहर तथा जल संधियाँ, 12. प्रमुख देश, उनकी राजधानी एवं मुद्राएँ

भारत का भूगोल: 1. भारत की भूगर्भिक संरचना एवं भू-आकृतिक प्रदेश, 2. अपवाह तंत्र, नदियाँ, प्रमुख झीलें तथा जलप्रपात, 3. जलवायु, वनस्पति एवं मृदा, 4. खनिज तथा ऊर्जा संसाधन, 5. उद्योग तथा औद्योगिक इकाइयाँ, 6. परिवहन, 7. प्रमुख जनजातियाँ तथा राज्यवार उपस्थिति, 8. अभ्यास प्रश्न

भारतीय अर्थव्यवस्था (171-202) 1. अर्थव्यवस्था के प्रकार एवं क्षेत्र, 2. आर्थिक विकास एवं मापन, 3. राष्ट्रीय आय एवं मापन, 4. आर्थिक नियोजन एवं पंचवर्षीय योजनाएँ, 5. मुद्रा एवं वित्तीय प्रणाली, 6. बैंकिंग व्यवस्था, 7. वित्तीय संस्थाएँ, 8. पूंजी बाजार, स्टॉक एक्सचेंज, 9. बजट एवं लोक वित्त, 10. कर व्यवस्था, 11. मुद्रास्फीति, 12. जनसंख्या एवं जनगणना, 13. गरीबी, बेरोजगारी एवं सरकारी योजनाएँ, 14. भुगतान संतुलन एवं व्यापार समझौते, 15. अभ्यास प्रश्न

सामान्य विज्ञान (203-294) भौतिक विज्ञान: 1. मापन, 2. भौतिक राशियाँ, 3. गति के नियम, 4. कार्य, ऊर्जा एवं शक्ति, 5. गुरुत्वाकर्षण, 6. आवर्ती गति, 7. तरंग, 8. ऊष्मा, 9. प्रकाश, 10. विद्युत, 11. इलेक्ट्रॉनिक्स, 12. रेडियो सक्रियता, नाभिकीय विखंडन एवं संलयन, 13. विविध

रसायन विज्ञान: 1. द्रव्य एवं उसकी अवस्थाएँ, 2. गैसों से संबंधित नियम, 3. परमाणु और अणु, 4. परमाणु मॉडल, 5. अकार्बनिक रसायन, 6. रासायनिक बंध, 7. रासायनिक अभिक्रिया, 8. अम्ल एवं क्षार, 9. विद्युत रासायनिक सेल, 10. ईंधन, 11. रासायनिक पदार्थ एवं उनके उपयोग, 12. हाइड्रोकार्बन, 13. कार्बनिक यौगिक एवं उनके उपयोग, 14. बहुलक, 15. विविध

जीव विज्ञान: 1. जैविक समुदाय का वर्गीकरण, 2. कोशिका, 3. DNA एवं RNA, 4. ऊतक, 5. पाचन तंत्र, 6. श्वसन तंत्र, 7. रुधिर परिसंचरण तंत्र, 8. उत्सर्जन तंत्र, 9. तंत्रिका तंत्र, 10. कंकाल तंत्र, 11. ग्रंथियाँ, एंजाइम एवं हार्मोन, 12. प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण, 13. पादप कार्यिकी, 14. मानव रोग, लक्षण एवं बचाव, 15. विविध, 16. अभ्यास प्रश्न

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (295-308) 1. विश्व के आरंभिक अंतरिक्ष कार्यक्रम, 2. भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम तथा संबंधित एजेंसी, 3. उपग्रह, 4. प्रक्षेपण यान, 5. अन्य वैज्ञानिक मिशन, 6. दूरसंचार प्रौद्योगिकी, 7. परमाणु अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रम, 8. रक्षा प्रौद्योगिकी

कंप्यूटर (309-320) 1. कंप्यूटर, कार्य तथा अवयव, 2. कंप्यूटर का विकास क्रम, 3. वर्गीकरण, 4. भाषा, 5. हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर, 6. डाटा संप्रेषण एवं इंटरनेट, 7. साइबर सुरक्षा, 8. कंप्यूटर शब्दावली

अंतर्राष्ट्रीय संगठन (321-326) 1. संयुक्त राष्ट्र, 2. विश्व व्यापार संगठन, 3. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, 4. विश्व बैंक, 5. अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठन, 6. प्रमुख रिपोर्ट एवं सूचकांक

पर्यावरण (327-341) 1. पारिस्थितिकी तंत्र, 2. भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2019, 3. जैव-भू-रासायनिक चक्र, 4. आहार शृंखला, 5. पारिस्थितिकीय पिरामिड, 6. जैव विविधता, 7. राष्ट्रीय उद्यान तथा वन्य जीव अभयारण्य, 8. प्रदूषण तथा ग्लोबल वार्मिंग, 9. पर्यावरण से संबंधित संगठन तथा सम्मेलन

कृषि एवं पशुपालन (342-347) 1. भारत में कृषि तथा प्रमुख फसलें, 2. कृषि के प्रकार, 3. प्रमुख भारतीय कृषि संस्थान, 4. पशुपालन

खेल-कूद (348-354) 1. खेल तथा संबंधित तथ्य, 2. प्रमुख देशों के राष्ट्रीय खेल, 3. प्रसिद्ध खेल मैदान, 4. ओलंपिक खेल, 5. राष्ट्रमंडल तथा एशियाई खेल, 6. भारत में खेलों से संबंधित पुरस्कार

विविध (355-379) 1. भारत में प्रथम, 2. विश्व में प्रथम, 3. भारत में सर्वाधिक लंबा, बड़ा एवं ऊँचा, 4. विश्व में सर्वाधिक बड़ा, छोटा, लंबा एवं ऊँचा, 5. विभिन्न देशों से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य (राजनीतिक दल, राष्ट्रीय चिह्न, समाचार एजेंसियाँ, पत्र एवं प्रकाशन स्थल इत्यादि), 6. महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दिवस तथा राज्यों की स्थापना दिवस, 7. भारत के प्रमुख संस्थान, 8. प्रमुख व्यक्तियों से संबंधित तथ्य (समाधि स्थल, लोकप्रिय उपनाम, स्थानों के उपनाम), 9. प्रमुख लेखक एवं पुस्तकें, 10. विश्व प्रसिद्ध यात्री एवं उनकी उपलब्धियाँ, 11. प्रमुख व्यक्ति तथा संबंधित कृत्य, 12. प्रमुख चिह्न तथा प्रतीक, 13. पुरस्कार एवं सम्मान (राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय), 14. भारत की प्रतिरक्षा

प्राचीन भारत (Ancient India)

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत अनेक और विविध प्रकार के हैं। हम उन्हें दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं- एक साहित्यिक और दूसरा पुरातात्विक।

साहित्यिक स्रोत

ब्राह्मण साहित्य वेद

वेद भारत के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। जिनका संकलनकर्ता महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास को माना जाता है।

- वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद।

ऋग्वेद

- यह प्राचीनतम वेद माना जाता है। इसमें कुल 10 मंडल तथा 1028 सूक्त हैं। इस वेद के पढ़ने वाले ऋषि को 'होतृ' कहते हैं। ऋग्वेद का पहला एवं 10वाँ मंडल सबसे अंत में जोड़ा गया है।
- ऋग्वेद के तीसरे मंडल में सूर्य देवता 'सवितृ' को समर्पित प्रसिद्ध गायत्री मंत्र है।
- 9वें मंडल में देवता सोम का उल्लेख है तथा 10वें मंडल में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था का उल्लेख है।

नोट: यूनेस्को द्वारा 'ऋग्वेद' की 30 पांडुलिपियों को 'यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर' में शामिल किया गया है।

यजुर्वेद

- इसमें यज्ञों के नियमों या विधानों का संकलन मिलने के कारण इसे कर्मकांडीय वेद भी कहा जाता है।
- यजुर्वेद के दो भाग हैं- शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद केवल पद्य में है जबकि कृष्ण यजुर्वेद, गद्य एवं पद्य दोनों में है।
- शुक्ल यजुर्वेद को 'वाजसनेयी संहिता' कहा जाता है।
- यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाला पुरोहित 'अध्वर्यु' कहलाता है।

सामवेद

- 'साम' का अर्थ 'गान' होता है। सामवेद में मुख्यतः यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। सामवेद से ही भारतीय संगीत

की उत्पत्ति मानी जाती है। इस ग्रंथ में कुल 1875 ऋचाएँ हैं जिनमें मूल रूप से 99 ऋचाएँ ही सामवेद की हैं, शेष ऋग्वेद से ली गई ऋचाएँ हैं।

- सामवेद के मंत्रों को गाने वाला 'उद्गाता' कहलाता है।

अथर्ववेद

- तीन वेदों के बाद अंत में इसकी रचना अथर्व तथा अंगिरस ऋषि द्वारा की गई। इसीलिये इसे 'अथर्वगिरस वेद' भी कहा जाता है।
- इसमें ब्रह्म-ज्ञान, धर्म, औषधि प्रयोग, रोग निवारण, जादू-टोना, तंत्र-मंत्र आदि अनेक विषयों का वर्णन है।
- अथर्ववेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाला पुरोहित 'ब्रह्मा' कहलाता है।

नोट: इन चार वेदों को 'संहिता' कहा जाता है।

वेद	संबंधित ब्राह्मण ग्रंथ	संबंधित उपनिषद
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकी	ऐतरेय, कौषीतकी
यजुर्वेद	शतपथ, तैत्तिरीय	कठोपनिषद, इशोपनिषद, वृहदारण्यक, श्वेताश्वतरोपनिषद, मैत्रायणी आदि।
सामवेद	पंचविंश, षडविंश	छांदोग्य, जैमिनीय
अथर्ववेद	गोपथ	मुंडकोपनिषद, मांडुक्योपनिषद, प्रश्नोपनिषद

वेदांग

- वेदों को भली-भाँति समझने के लिये छः वेदांगों की रचना की गई- शिक्षा (उच्चारण विधि), ज्योतिष (भाग्यफल), कल्प (कर्मकांड), व्याकरण (शब्द व्युत्पत्ति), निरुक्त (भाषा विज्ञान) तथा छंद (चतुष्पदी श्लोक)।

महाकाव्य

- वैदिक साहित्य के बाद भारतीय साहित्य में महाकाव्यों का समय आता है। इसमें रामायण और महाभारत प्रमुखतः शामिल हैं।
- रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि तथा महाभारत की रचना महर्षि वेदव्यास ने की थी।

संविधान की प्रमुख विशेषताएँ एवं उद्देशिका

हर संविधान का एक दर्शन होता है। भारत के संविधान का भी एक दर्शन है, जो जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत 'उद्देश्य प्रस्ताव' में निहित है। यही उद्देश्य प्रस्ताव संविधान की 'प्रस्तावना' (Preamble) का आधार बना और इसी ने संपूर्ण संविधान के 'दर्शन' को मूर्त रूप प्रदान किया। उद्देशिका (प्रस्तावना) को 'संविधान की आत्मा' भी कहा जाता है।

संविधान सभा के गठन का विचार सर्वप्रथम वामपंथी नेता एम. एन. राँय द्वारा 1934 में रखा गया था।

संविधान की उद्देशिका

उद्देशिका को संविधान सभा ने 22 जनवरी, 1947 को स्वीकार किया, जिसे जवाहरलाल नेहरू ने 13 दिसंबर, 1946 को उद्देश्य-प्रस्ताव के रूप में संविधान सभा के समक्ष पेश किया था।

प्रस्तावना (उद्देशिका)

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिये,

तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिये

दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई० (मिति-मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

- प्रस्तावना प्रवर्तनीय नहीं है अर्थात् इसकी व्यवस्थाओं को लागू करवाने के लिये न्यायालय का सहारा नहीं लिया जा सकता।
- भारतीय संविधान, संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर, 1949 को स्वीकृत, अंगीकृत व अधिनियमित हुआ था, जबकि 26 जनवरी, 1950 से पूर्ण भारतीय संविधान लागू हुआ था।

- संविधान को 26 जनवरी के दिन लागू करने का निर्णय, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा लाहौर अधिवेशन (दिसंबर 1929) में की गई घोषणा तथा 26 जनवरी, 1930 के दिन को पूर्ण स्वराज्य दिवस के रूप में मनाए जाने के कारण लिया गया।
- संविधान सभा का चुनाव अप्रत्यक्ष निर्वाचन पद्धति द्वारा हुआ था, जिसमें सामान्यतः प्रत्येक 10 लाख की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि चुना गया।

संविधान सभा में कुल 389 सीटें (ब्रिटिश भारत 296, देशी रियासतें 93) थीं, जिनमें ब्रिटिश भारत की सीटों में कांग्रेस को 208, मुस्लिम लीग को 73 व अन्य छोटे दलों को 15 सीटें प्राप्त हुईं। संविधान सभा में कुल 15 महिलाएँ थीं।

- संविधान की निर्माण प्रक्रिया में श्री बी.एन. राव को संवैधानिक सलाहकार नियुक्त किया गया तथा विश्व के लगभग 60 महत्वपूर्ण देशों के संविधान का अध्ययन किया गया।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर, 1946 को हुई थी। संविधान के फाइनल ड्राफ्ट को बनाने में 2 साल 11 माह और 18 दिनों का समय लगा था।
- संविधान सभा में संविधान का प्रथम वाचन 4 से 9 नवंबर, 1948 तक, द्वितीय वाचन 15 नवंबर, 1948 से 17 अक्टूबर, 1949 तक तथा तृतीय वाचन 14 नवंबर से 26 नवंबर 1949 तक चला।
- संविधान सभा प्रतीक (मुहर)-हाथी
- एस.एन. मुखर्जी को संविधान सभा का मुख्य प्रारूपकार नियुक्त किया गया था।
- संविधान सभा के 7वें अधिवेशन में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।
- भारतीय संविधान की मूल प्रतियों को हीलियम में रखकर सुरक्षित रखा गया है।
- भारतीय संविधान पूर्णतः हस्तलिखित है। इसे श्री प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने लिखा था।
- संविधान के पृष्ठों (हिंदी संस्करण) को सजाने का कार्य शांति निकेतन के कलाकार नंदलाल बोस द्वारा किया गया।
- संविधान में कुल 395 अनुच्छेद, 22 भाग व 12 अनुसूचियाँ हैं।

विश्व भूगोल (World Geography)

परिचय

- भूगोल (Geography) एक प्राचीनतम भू-विज्ञान है और इसकी नींव प्रारंभिक यूनानी विद्वानों के कार्यों में दिखाई पड़ती है। 'Geographia' शब्द का प्रथम प्रयोग यूनानी विद्वान इरेटोस्थनीज़ ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में किया था।
- मार्टिन बैहम को विश्व ग्लोब का निर्माता कहा जाता है।
- विश्व मानचित्र का निर्माणकर्ता अनेग्जीमेंडर है।
- स्ट्राबो ने भौगोलिक विश्वकोश की रचना की।
- आधुनिक भूगोल का पिता अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट को कहा जाता है।
- खगोल विज्ञान के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान सहयोग एवं अध्ययन को बढ़ावा देने हेतु 1919 में अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ (IAU) का गठन किया गया। इसका मुख्यालय पेरिस (फ़्रांस) में है।

ब्रह्मांड (Universe)

- ब्रह्मांड का वैज्ञानिक अध्ययन कॉस्मोलॉजी (Cosmology) कहलाता है।
- गॉड पार्टिकल (हिग्स बोसॉन) से ब्रह्मांड की उत्पत्ति के रहस्यों को सुलझाने का प्रयास किया जा रहा है।
- ब्रह्मांड की उत्पत्ति के विषय में तीन मुख्य सिद्धांत हैं-
 - ◆ महाविस्फोट सिद्धांत (बिग-बैंग थ्योरी)- इसका प्रतिपादन बेल्लिजियम के पादरी जॉर्ज लैमेटेयर ने किया। महाविस्फोट सिद्धांत को ही ब्रह्मांड की उत्पत्ति का मानक सिद्धांत माना जाता है।
 - ◆ 'साम्यावस्था सिद्धांत' (Steady State Theory)- इसका प्रतिपादन गोल्ट, हर्मन बॉडी एवं सर फ्रेड होल ने किया।
 - ◆ दोलन सिद्धांत (Oscillating Universe Theory)- ब्रह्मांड के विस्तार और संकुचन से संबद्ध इस नए सिद्धांत के प्रवर्तक डॉ. एलन सैंडेज हैं।
- ब्रह्मांड में पाए जाने वाले सभी आकाशीय पिंडों की विशेषताओं का वैज्ञानिक अध्ययन खगोलशास्त्र (Astronomy) के अंतर्गत आता है।
- सर्वप्रथम कॉपरनिकस ने 16वीं शताब्दी में यह प्रतिपादित किया कि सूर्य हमारे सौरमंडल का केंद्र है और पृथ्वी उसकी परिक्रमा करती है।
- खगोलशास्त्री केपलर ने 17वीं शताब्दी में ग्रहों के गति संबंधी नियमों का प्रतिपादन किया था।

- खगोलशास्त्री एडविन हब्ल ने बताया कि हमारी आकाशगंगा के समान ब्रह्मांड में कई आकाशगंगाएँ पाई जाती हैं।

आकाशगंगा (Galaxy)

- एक आकाशगंगा के निर्माण की शुरुआत हाइड्रोजन गैस से बने विशाल बादल के संचयन से होती है जिसे निहारिका कहते हैं।
- ब्रह्मांड में पाए जाने वाले तारों, ग्रहों, उपग्रहों आदि के जमाव (पुंज) को आकाश गंगा कहते हैं।
- आकाशगंगा 'मंदाकिनी' को सबसे पहले गैलीलियो ने टेलिस्कोप की सहायता से देखा था।
- ब्रह्मांड में आकाशगंगा की दीर्घ वृत्ताकर (Elliptical), सर्पिल (Spiral) तथा अव्यवस्थित (Irregular) प्रकार की आकृतियाँ पहचानी गई हैं
- हमारी आकाशगंगा दुग्ध मेखला/मंदाकिनी (Milky Way) सर्पिल आकृति की है।

तारा (Star)

- तारे ब्रह्मांड में पाए जाने वाले गैसों के चमकदार पिंड होते हैं। इनमें अपना प्रकाश पाया जाता है जिसका स्रोत नाभिकीय संलयन होता है।
- तारों में सर्वाधिक मात्रा हाइड्रोजन गैस (70%) की होती है। इसके बाद हीलियम गैस की मात्रा होती है।
- एक निश्चित आकृति में व्यवस्थित तारों के समूह को नक्षत्र कहा जाता है।
- तारों का रंग उनकी आयु का सूचक होता है। जो तारा जितना चमकीला होता है उसकी आयु उतनी ही कम होती है।
- पृथ्वी के ध्रुव पर 90 डिग्री का कोण बनाने वाला तारा ध्रुव (Pole Star) तारा कहलाता है।
- जब चंद्रमा, सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाता है तो इसे सूर्यग्रहण कहा जाता है। यह घटना केवल अमावस्या को ही होती है।
- खगोलीय दूरियों, यथा- तारों व नक्षत्रों के मध्य व अन्य लंबी दूरियों को प्रकाशवर्ष में मापा जाता है। एक प्रकाशवर्ष प्रकाश द्वारा निर्वात में एक वर्ष में तय की गई दूरी के बराबर है।
- हमारे अंतरिक्ष में कुल 89 तारामंडल हैं।

अर्थशास्त्र (Economics)

एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र के अंतर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि व्यक्ति, समाज और सरकार द्वारा किस तरह से अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर संसाधनों का इस्तेमाल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किया जाता है।

अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था (Economics and the Economy)

अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध सामान्यतः सिद्धांत और व्यवहार का है। जहाँ अर्थशास्त्र बाजार के सिद्धांतों, रोजगार आदि की बात करता है, वहीं अर्थव्यवस्था किसी क्षेत्र विशेष की समस्त आर्थिक क्रियाओं को प्रदर्शित करती है।

अतः किसी क्षेत्र विशेष के अनुकूल अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का व्यावहारिक उपयोग ही उस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कहलाता है।

अर्थव्यवस्थाओं का वर्गीकरण

अर्थव्यवस्थाओं (देशों) द्वारा अपनाई गई उत्पादन प्रणालियों तथा उनमें राज्य या सरकार की भूमिका के आधार पर अर्थव्यवस्थाओं का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है-

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था

- इस अर्थव्यवस्था में किसका उत्पादन होगा, कितना होगा और उसकी बिक्री किस कीमत पर होगी, इन सभी का निर्धारण बाजार द्वारा किया जाता है। इसमें सरकार की कोई आर्थिक भूमिका नहीं होती।
- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था तथा शास्त्रीय अर्थशास्त्र का उद्गम स्रोत एडम स्मिथ की पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' (1776) को माना जाता है।

राज्य अर्थव्यवस्था

- इस अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आपूर्ति और कीमत का फैसला सरकार द्वारा किया जाता है। ऐसी अर्थव्यवस्थाओं को केंद्रीकृत नियोजित अर्थव्यवस्था भी कहते हैं।
- इस प्रकार की अर्थव्यवस्था का पहला सिद्धांत जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स (1818-1883) ने दिया था।
- बोलशेविक क्रांति (1917) के फलस्वरूप सोवियत संघ में राज्य अर्थव्यवस्था का विकास हुआ, जहाँ इसे समाजवादी अर्थव्यवस्था भी कहते हैं। बाद के वर्षों में चीन तथा पूर्वी यूरोप के कई देशों में यह अर्थव्यवस्था प्रचलित हुई।

मिश्रित अर्थव्यवस्था

इसमें कुछ आधारभूत और महत्वपूर्ण क्षेत्रों की आर्थिक जिम्मेदारी सरकार की होती है तथा बाकी आर्थिक गतिविधियाँ निजी क्षेत्र के लिये छोड़ दी जाती हैं। अतः मिश्रित अर्थव्यवस्था में राज्य अर्थव्यवस्था तथा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, दोनों के लक्षण विद्यमान रहते हैं।

- जॉन मेनार्ड केंस ने अपनी पुस्तक 'द जनरल थ्योरी ऑफ एंप्लायमेंट, इंटरैस्ट एंड मनी' (1936) में सुझाव दिया कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था द्वारा समाजवादी अर्थव्यवस्था को अपने में समाहित करना चाहिये। ऐसी ही सलाह 1950 के दशक में ऑस्कर लांज ने समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं को दिया था। उनके अनुसार समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं को पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अच्छे तत्वों को अपने में समाहित करना चाहिये।
- भारत सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र के सहअस्तित्व के कारण एक मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला देश है।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

अर्थव्यवस्था की आर्थिक गतिविधियों के आधार पर इसे निम्नलिखित तीन श्रेणियों में बाँटा गया है, जिन्हें अर्थव्यवस्था का क्षेत्र/क्षेत्रक कहते हैं-

प्राथमिक क्षेत्र

- वह क्षेत्र जहाँ प्राकृतिक संसाधनों को कच्चे तौर पर प्राप्त किया जाता है, जैसे- कृषि कार्य, उत्खनन, पशु पालन, मछली पालन इत्यादि।
- इस क्षेत्र को कृषि एवं संबद्ध गतिविधियाँ भी कहा जाता है।

द्वितीयक क्षेत्र

- वह क्षेत्र जो प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों को अपनी गतिविधियों में कच्चे माल के रूप में उपयोग करता है द्वितीयक क्षेत्र कहलाता है।
- इस क्षेत्र में विनिर्माण कार्य होता है जिस कारण इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है।
- लौह और इस्पात उद्योग, वाहन उद्योग, वस्त्र उद्योग, फर्निचर उद्योग इत्यादि इसके अंतर्गत आते हैं।
- इसमें कुशल श्रमिक को 'व्हाइट कॉलर जॉब' तथा उत्पादन में प्रत्यक्ष रूप से संलग्न श्रमिक को 'ब्लू कॉलर जॉब' वर्ग नाम से संबोधित किया जाता है।

भौतिकी (Physics)

भौतिक विज्ञान, विज्ञान की वह शाखा है जिसमें द्रव्य, ऊर्जा तथा उनकी अन्योन्य क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

मापन (Measurement)

किसी भौतिक राशि का मापन एक निश्चित, आधारभूत एवं मान्यताप्राप्त, संदर्भ-मानक से राशि की तुलना करना है तथा इस संदर्भ मानक को 'मात्रक' कहते हैं। दैनिक जीवन में भौतिक राशियों की संख्या अत्यधिक है, फिर भी इनके मापन के लिये मात्रकों की सीमित संख्या ही आवश्यक है, क्योंकि ये राशियाँ परस्पर अंतर्संबंधित होती हैं।

- मूल राशियों को व्यक्त करने के लिये प्रयुक्त मात्रकों को मूल मात्रक कहते हैं।
- मूल मात्रकों के संयोजन से प्राप्त व्युत्पन्न राशियों के मात्रक को 'व्युत्पन्न मात्रक' कहते हैं।
- वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य प्रणाली 'सिस्टम इंटरनेशनल डि यूनिट्स' है, जिसे संकेताक्षर में SI लिखा जाता है। SI में सात मूल मात्रक हैं।
- SI से पूर्व तीन प्रणालियाँ मापन के लिये उपयोग में लाई जाती थीं-
 - ◆ CGS प्रणाली में सेंटीमीटर, ग्राम, सेकेंड।
 - ◆ FPS प्रणाली में फुट, पाउंड, सेकेंड।
 - ◆ MKS प्रणाली में मीटर, किलोग्राम, सेकेंड।

मूल राशि	मात्रक	प्रतीक
लंबाई	मीटर	m
द्रव्यमान	किलोग्राम	kg
समय	सेकेंड	s
विद्युत धारा	एंपीयर	A
ऊष्मा गतिक ताप	केल्विन	K
पदार्थ की मात्रा	मोल	mol
ज्योति-तीव्रता	कैंडेला	cd

- प्रकाश की निर्वात में चाल 3×10^8 मीटर/से. होती है। सूर्य से धरती तक पहुँचने में प्रकाश को लगभग 8 मिनट 20 सेकेंड लगते हैं।
- प्रकाश वर्ष, निर्वात में प्रकाश द्वारा 1 वर्ष में तय की गई दूरी (9.46×10^{15} मीटर) होती है। इसे एक प्रकाश वर्ष कहते हैं।

- पारसेक का उपयोग अत्यधिक लंबी खगोलीय दूरी को व्यक्त करने में किया जाता है।
- अत्यधिक कम दूरी को मापने के लिये नैनोमीटर का उपयोग किया जाता है। एक नैनोमीटर में 1×10^{-9} मीटर होता है।

कुछ अन्य मापन की इकाई

भौतिक राशि	मापन की इकाई
दाब	पास्कल (Pa)
ध्वनि की प्रबलता	डेसीबल (db)
प्रकाश की तरंगदैर्घ्य	एंग्स्ट्रॉम (Å)
नौसंचालन में दूरी	नॉटिकल मील (NM)
ऊष्मा	कैलोरी (Cal)
विद्युत विभवांतर	वोल्ट (v)
तापमान	सेल्सियस ($^{\circ}\text{C}$)
आवृत्ति	हर्ट्ज (Hz)
जल का बहाव	क्यूसेक (Cusec)
ओजोन परत की मोटाई	डॉब्सन इकाई (Du)
ज्योति फ्लक्स	ल्यूमेन (lm)
चुंबकीय प्रेरण (क्षेत्र)	टेस्ला (T)
समतल कोण	रेडियन (rad)
घन कोण	स्टेरेडियन (Sr)

विमीय सूत्र एवं विमीय समीकरण

किसी भौतिक राशि का विमीय सूत्र वह व्यंजक है, जो यह दर्शाता है कि किसी भौतिक राशि में किस मूल राशि की कितनी विमाएँ हैं। विमाओं द्वारा ही किसी भौतिक राशि की प्रकृति की व्याख्या की जाती है। लंबाई की विमा को [L], समय की [T] तथा द्रव्यमान की विमा को [M] से प्रदर्शित करते हैं।

जब किसी भौतिक राशि को मूल राशियों और उनकी विमाओं के रूप में निरूपित किया जाता है तो इसे उस राशि का विमीय समीकरण कहते हैं।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी (Space Technology)

विश्व के आरंभिक अंतरिक्ष कार्यक्रम

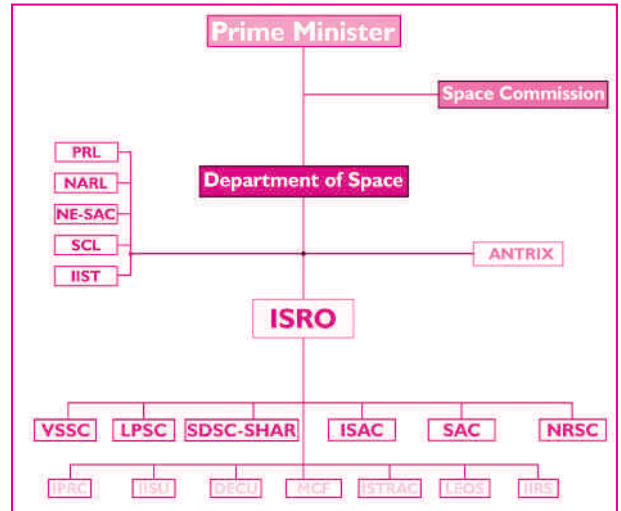
प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अमेरिका तथा सोवियत संघ के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का तेजी से विकास हुआ।

- स्पूतनिक- 1 मानव निर्मित पहला उपग्रह था, जिसे सोवियत संघ (USSR) द्वारा 4 अक्टूबर, 1957 को लॉन्च किया गया।
- वर्ष 1958 में एक्सप्लोरर-1 पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश करने वाला पहला अमेरिकी उपग्रह था।
- पृथ्वी की कक्षा में जाने वाले पहले व्यक्ति यूरी गागरिन थे, जिन्होंने 12 अप्रैल, 1961 को पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश किया और स्पेस में 108 मिनट व्यतीत किये।
- 20 जुलाई, 1969 को अपोलो-11 के अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग (Neil Armstrong) चंद्रमा की सतह पर कदम रखने वाले प्रथम व्यक्ति बने।
- सल्यूट-1, सोवियत संघ द्वारा वर्ष 1971 में लॉन्च किया गया पहला स्पेस स्टेशन था।
- अप्रैल 1981 में पहला स्पेस शटल कोलंबिया या STS-1 नासा द्वारा लॉन्च किया गया, जो पुनः उपयोग किया जा सकता था।
- 20 फरवरी, 1986 को रूस ने 'मीर' स्पेस स्टेशन का कोर मॉड्यूल लॉन्च किया, जिसका निर्माण अगले दस वर्षों में पूर्ण कर लिया गया।
- इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन ISS का निर्माण कार्य 1998 में शुरू हुआ। यह यू.एस.ए. की नासा (NASA), रूस की रॉस्कॉस्मॉस (Roscosmos), जापान की जाक्सा (Jaxa), यूरोप ई.एस.ए. (ESA) तथा कनाडा की सी.एस.ए. (CSA) की एक संयुक्त परियोजना है।

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम

- वर्ष 1954 में गठित परमाणु ऊर्जा विभाग की देख-रेख में वर्ष 1962 में 'भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति' का गठन किया गया।
- केरल में 'थुंबा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन' स्थापित किया गया।
- नवंबर 1963 में देश में पहला साउंडिंग रॉकेट 'नाइक अपाचे' थुंबा रॉकेट प्रक्षेपण स्थल से प्रक्षेपित किया गया।
- वर्ष 1969 में 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (ISRO) की स्थापना की गई।

- वर्ष 1972 में अंतरिक्ष आयोग तथा अंतरिक्ष विभाग गठित कर इसरो को अंतरिक्ष विभाग के अधीन कर दिया गया।
- तिरुवनंतपुरम् स्थित सेंट मेरी मैकडेलेन चर्च, भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के आरंभिक दिनों में मुख्य ऑफिस था।



अंतरिक्ष विभाग (Space Department)

इसका मुख्य उद्देश्य अंतरिक्ष विज्ञान के अनुसंधान और ग्रहीय अन्वेषण को जारी रखते हुए राष्ट्र के विकास में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को लगातार उन्नत बनाना है। अंतरिक्ष विभाग, इसरो तथा अन्य संस्थाओं के माध्यम से इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करता है।

अंतरिक्ष विभाग की प्रमुख एजेंसियाँ:

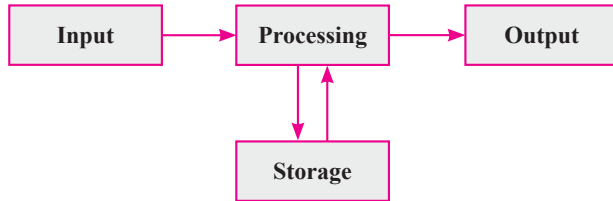
एजेंसी	उद्देश्य
भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL) (अहमदाबाद (गुजरात))	प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक भौतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, पृथ्वी अन्य ग्रहों तथा वायुमंडल विज्ञान के क्षेत्र में बुनियादी अनुसंधान में संलग्न संस्थान।
सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला (SCL) (मोहाली) पंजाब	माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने हेतु प्रयासरत संस्थान।

कंप्यूटर (Computer)

कंप्यूटर एक ऐसा इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है, जो इनपुट के रूप में डाटा ग्रहण करता है और उसे प्रोसेस करके सार्थक (अर्थपूर्ण) सूचनाओं के रूप में प्रदर्शित (Output) करता है।

कार्य (Function)

डाटा इनपुट, डाटा प्रोसेसिंग, डाटा संचयन तथा डाटा निर्गमन का कार्य कंप्यूटर द्वारा किया जाता है।



कंप्यूटर सिस्टम (Computer System)

यह उपकरणों का समूह है, जो कंप्यूटर के सुचारू संचालन के लिये आपस में जुड़े होते हैं।

कंप्यूटर सिस्टम के मुख्य अवयव

इनपुट यूनिट	यह उपयोगकर्ता को प्रोसेसिंग के लिये डाटा या सूचना को प्रोसेसिंग यूनिट को प्रदान करने में सक्षम बनाता है।
प्रोसेसिंग यूनिट	इनपुट यूनिट से प्राप्त डाटा को उपयोगी सूचना में परिवर्तित करता है।
आउटपुट यूनिट	यह प्रोसेस डाटा उपयोगकर्ता को उपलब्ध कराता है।
स्टोरेज यूनिट	यह डाटा, प्रोग्राम तथा सूचनाओं को स्टोर करता है।

कंप्यूटर से संबंधित शब्द

- **डाटा (Data):** अव्यवस्थित आँकड़ा या तथ्य डाटा कहलाता है। जब डाटा केवल अंकों में होता है तब यह संख्यात्मक (Numeric) डाटा तथा जब अंकों, अक्षरों तथा चिह्नों के रूप में होता है तब यह 'अल्फान्यूमेरिक (Alphanumeric) डाटा' कहलाता है।
- **सूचना (Information):** यह प्रोसेसिंग के बाद व्यवस्थित उपयोगी डाटा होता है।
- **निर्देश (Instruction):** उपयोगकर्ता द्वारा कंप्यूटर को दिये गए कमांड, 'निर्देश' कहलाते हैं।
- **प्रोग्राम (Programme):** किसी कार्य के लिये कंप्यूटर को दिये जाने वाले निर्देशों के समूह 'प्रोग्राम' कहलाते हैं।

कंप्यूटर का विकास (Evolution of Computer)

- **वर्ष 1642:** प्रथम गणना करने वाली मशीन पास्कलाइन (Pascaline) का विकास फ्राँसीसी वैज्ञानिक **ब्लेज पास्कल** द्वारा किया गया।
- अंग्रेज गणितज्ञ **चार्ल्स बैबेज** ने वाष्प चालित गणना करने वाली मशीन **विश्लेषणात्मक (Analytical) इंजन** का विकास किया।
 - ◆ चार्ल्स बैबेज को कंप्यूटर का जन्मदाता माना जाता है।
 - ◆ चार्ल्स बैबेज द्वारा ही डिफरेंस इंजन (Difference engine) का विकास किया गया था।
- **वर्ष 1890:** हरमन **हॉलेरिथ** द्वारा 'पंचकार्ड' बनाया गया, जिसमें गणना से संबंधित जानकारी को स्टोर किया जा सकता था।
- **वर्ष 1936:** एलन **ट्यूरिंग** द्वारा 'ट्यूरिंग मशीन' का विकास। आधुनिक कंप्यूटर की मूल अवधारणा इसी पर आधारित है। **एलन ट्यूरिंग को आधुनिक कंप्यूटर का जनक माना जाता है।**
- **वर्ष 1944:** स्वचालित अनुक्रम नियंत्रित कैलकुलेटर मार्क-1 बनकर तैयार हुआ।
- **वर्ष-1945:** में गणितज्ञ जॉन वॉन न्यूमैन द्वारा पहली बार स्टोर्ड प्रोग्राम की अवधारणा प्रस्तुत की गई। न्यूमैन ने ही बाईनरी नंबर सिस्टम तथा कंप्यूटर आर्किटेक्चर की अवधारणा भी दी थी।
- **वर्ष 1946:** इलेक्ट्रॉनिक न्यूमेरिकल इंटीग्रेटर एंड कैलकुलेटर (ENIAC) का निर्माण हुआ। यह पहला इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर था, जो सामान्य उद्देश्यों हेतु प्रयोग किया गया।
- **वर्ष 1947:** बेल लेबोरेटरी (Bell Laboratories) द्वारा ट्रांजिस्टर का आविष्कार किया गया। इसने कंप्यूटर में लगने वाले वैक्यूम ट्यूब को प्रतिस्थापित किया।
- **वर्ष 1951:** UNIVAC-I (Universal Automatic Computer) का निर्माण पूरा हुआ। इसे Eckert - Mauchly Computer Corporation द्वारा डिजाइन किया गया था। यह पहला वाणिज्यिक (Commercial) कंप्यूटर था। इसका उपयोग यू.एस. प्रेसीडेंट इलेक्शन परिणामों के पूर्वानुमान तथा जनगणना में किया गया था।
- **वर्ष 1950:** के दशक में FORTRAN भाषा का विकास हुआ।
- **वर्ष 1958:** जैक किल्बी (Jack Kilby) तथा रॉबर्ट नॉएस (Robert Noyce) ने इंटीग्रेटेड सर्किट या कंप्यूटर चिप का आविष्कार किया। इंटीग्रेटेड सर्किट (IC) सिलिकॉन का बना हुआ ट्रांजिस्टरों का समूह होता है।
- **विलियम इंगलिश** ने पहले माउस का प्रोटोटाइप तैयार किया।

संयुक्त राष्ट्र (United Nations)

- द्वितीय विश्वयुद्ध से फैली अशांति व मंदी के फलस्वरूप विश्व में शांति की स्थापना हेतु 26 जून, 1945 को 'सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन' में संयुक्त राष्ट्र (UN) के गठन का प्रस्ताव पारित हुआ, जो 24 अक्टूबर, 1945 को लागू हुआ। इसलिये 24 अक्टूबर प्रतिवर्ष संयुक्त राष्ट्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- संयुक्त राष्ट्र अथवा यूनाइटेड नेशन का नाम तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने रखा था।
- संयुक्त राष्ट्र के संस्थापक सदस्य देशों की संख्या 51 थी। 26 जून, 1945 को अधिकार-पत्र पर सिर्फ 50 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किये थे। पोलैंड 15 अक्टूबर, 1945 को इस पर हस्ताक्षर कर 51वाँ संस्थापक सदस्य बना।
- वर्तमान में 193 देश संयुक्त राष्ट्र के सदस्य हैं। 193वाँ देश दक्षिणी सूडान है। प्रशांत महासागर के एक छोटे से द्वीप तुवालू को 189वें, स्विट्ज़रलैंड को 190वें, पूर्वी तिमोर को 191वें तथा मोंटीनिग्रो को 192वें सदस्य देश के रूप में मान्यता प्रदान की गई।
- संयुक्त राष्ट्र का मुख्यालय न्यूयॉर्क में है। इसका भवन 17 एकड़ जमीन पर बना है, जो जॉन डी. रॉकफेलर जूनियर ने दान में दी थी। यहीं इसका सचिवालय भी स्थित है।
- वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक (मान्यता प्राप्त) और कार्यकारी भाषाएँ – अंग्रेज़ी, फ्रेंच, चीनी, अरबी, रूसी तथा स्पेनिश हैं। किंतु शुरुआत में इसकी कार्यकारी भाषाएँ सिर्फ अंग्रेज़ी और फ्रेंच थीं।
- संयुक्त राष्ट्र का ध्वज: हल्की नीली पृष्ठभूमि पर श्वेत रंग से संयुक्त राष्ट्र का प्रतीक (जैतून की दो वक्राकार शाखाएँ, जो ऊपर से खुली हैं तथा उनके बीच विश्व का मानचित्र बना है)।
- न्यूयॉर्क स्थित संयुक्त राष्ट्र का मुख्यालय 1952 में बनकर तैयार हुआ। इसकी महासभा की प्रथम बैठक अक्टूबर 1952 में आयोजित की गई।
- संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता के लिये निर्णय, सुरक्षा परिषद् के पाँच स्थायी सदस्यों (अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन, फ्राँस) की सहमति और महासभा के दो-तिहाई बहुमत के आधार पर लिया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव

नाम	देश	कार्यकाल
ट्रिग्वे ली	नॉर्वे	1946-1952 (स्वयं इस्तीफा दिया)
डैग हैमरशोल्ड	स्वीडन	1953-1961 (हवाई दुर्घटना में मृत्यु)
यू थांट	म्याँमार	1961-1971
कुर्त वाल्दीहीम	ऑस्ट्रिया	1972-1981
जेवियर पेरेज द कुइयार	पेरू	1982-1991
बुतरस बुतरस घाली	मिस्र	1992-1996
कोफी अन्नान	घाना	1997-2006
बान की मून	दक्षिण कोरिया	जनवरी 2007 से दिसंबर 2016
एंटोनियो गुटेरेस	पुर्तगाल	जनवरी 2017 से अब तक

- संयुक्त राष्ट्र के 6 प्रमुख अंग हैं—

1. महासभा (General Assembly)
2. सुरक्षा परिषद् (Security Council)
3. आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् (Economic and Social Council)
4. प्रत्यास परिषद् (Trusteeship Council)
5. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (International Court of Justice)
6. सचिवालय (Secretariat)

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का मुख्यालय नीदरलैंड के 'द हेग' में स्थित है, जबकि अन्य सभी अंगों के मुख्यालय न्यूयॉर्क में हैं।

महासभा

- यह संयुक्त राष्ट्र की व्यवस्थापिका सभा है। इसमें सभी सदस्य राष्ट्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। इसलिये इसे विश्व की लघु संसद भी कहा जाता है।
- प्रत्येक सदस्य देश इसमें अधिकतम 5 प्रतिनिधि भेज सकता है,

पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem)

जीवों का समुदाय और साथ ही वह पर्यावरण जिसमें वे निवास करते हैं, 'पारिस्थितिकी तंत्र' अथवा 'पारितंत्र (इकोसिस्टम)' कहलाता है। यह एक खुला तंत्र है। पारितंत्र का आकार एक छोटे तालाब से लेकर एक विशाल महासागर तक हो सकता है। सामुद्रिक पारिस्थितिकी तंत्र पृथ्वी का सबसे बड़ा व स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र है।

पारिस्थितिकी (Ecology): जीवों के आपसी संबंधों और पर्यावरण के बीच उनके संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन 'पारिस्थितिकी' (इकोलॉजी) कहलाता है। इस शब्द के प्रथम प्रयोगकर्ता 'अर्नेस्ट हेकेल' थे।

पर्यावरण (Environment): पर्यावरण एक गतिशील प्राकृतिक इकाई है, जिसमें जैविक तथा अजैविक घटक परस्पर अंतः क्रिया कर अंतर्संबंधित होते हैं। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को मनाया जाता है।

जैविक समुदाय (Biotic Community): विभिन्न प्रजातियों के समुदाय, जो एक ही क्षेत्र में रहते हैं तथा एक-दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करते हैं, 'जैविक समुदाय' कहलाते हैं। किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र का विकास जैविक घटकों (उत्पादक, उपभोक्ता, अपघटक) के साथ अजैविक घटकों (स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल) के अंतर्संबंधों से होता है।

बायोम (Biome): सभी पौधे तथा जंतु पर्यावरण से संयुक्त क्रिया और प्रतिक्रिया द्वारा परस्पर संबंधित हैं। एक क्षेत्र में अनेक समुदायों का यह जाल ही 'बायोम' कहलाता है। बायोम एक 'जैविक कटिबंध' होता है।

जैवमंडल (Biosphere): बायोम के समूह को 'जैवमंडल' कहते हैं, जो जैविक और अजैविक समुदायों के बीच अंतर्संबंधों से निर्मित वृहद् एवं जटिल पारिस्थितिकी तंत्र है। यह पृथ्वी के तीन अजैव परिमंडलों, यथा-स्थलमंडल, वायुमंडल तथा जलमंडल के मिलन स्थल पर होता है, जहाँ जीवन का कोई-न-कोई अंश मौजूद होता है।

निकेत (Niche)

एक प्रजाति को जीने के लिये जिन जैविक, भौतिक या रासायनिक कारकों की जरूरत होती है, उन सबको सम्मिलित रूप से निकेत कहते हैं। दूसरे शब्दों में निकेत ऐसा स्थान है, जहाँ किसी प्रजाति के अस्तित्व के लिये आवश्यक पर्यावरणीय दशाएँ सुलभ हों। सामान्यतः दो भिन्न प्रजातियों का निकेत एक समान नहीं होता।

पारिस्थितिकी तंत्र के घटक

पारिस्थितिकी तंत्र के मुख्य रूप से तीन घटक होते हैं- अजैविक घटक, जैविक घटक और ऊर्जा संघटक। पारिस्थितिकी निकाय में ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत सौर ऊर्जा है।

अजैविक घटक

इसके अंतर्गत ऐसे निर्जीव पदार्थ आते हैं, जो जीवों को किसी-न-किसी रूप में प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिये- मृदा, वायु, जल, कार्बनिक और अकार्बनिक पदार्थ आदि।

जैविक घटक

इसके अंतर्गत मुख्य रूप से पौधे, जंतु एवं सूक्ष्म जीवों को शामिल किया जाता है, जो क्रमशः स्वपोषी (उत्पादक), परपोषी (उपभोक्ता) एवं मृतपोषी (अपघटक) कहलाते हैं।

स्वपोषी (Autotrophs)

इसके अंतर्गत मुख्यतः हरे पौधे, शैवाल (Algae) व कुछ बैक्टीरिया आते हैं। ये मुख्यतः प्रकाश-संश्लेषण (बैक्टीरिया द्वारा रसायन संश्लेषण किया जाता है) द्वारा कार्बोहाइड्रेट का संश्लेषण करते हैं, जो इनके साथ-साथ अन्य जीवों के लिये भी भोजन का मुख्य स्रोत होता है। इसलिये इन्हें 'उत्पादक' कहा जाता है और प्रथम पोषण स्तर (First Trophic Level) के अंतर्गत रखा जाता है।

परपोषी (Heterotrophs)

इसके अंतर्गत वे जीव आते हैं, जो अपने भोजन के लिये पौधों, जंतुओं या दोनों पर निर्भर होते हैं। भोजन के स्रोत के आधार पर इन्हें हम शाकाहारी (Herbivores), माँसाहारी (Carnivores) और सर्वाहारी (Omnivores) वर्गों में बाँट सकते हैं।

शाकाहारी

ये अपना भोजन मुख्यतः पौधों से प्राप्त करते हैं। इसलिये ये 'प्राथमिक उपभोक्ता' कहलाते हैं, किंतु पोषण स्तर में ये द्वितीयक स्तर पर होते हैं। उदाहरण के लिये जंतु प्लवक (जूप्लैक्टन), गाय इत्यादि।

माँसाहारी

माँसाहारियों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है- एक वे जो शाकाहारी जंतुओं को खाते हैं और दूसरे वे जो शाकाहारी और माँसाहारी दोनों तरह के जीवों को खाते हैं। पहले वर्ग में हम लोमड़ियों, पक्षियों आदि को रख सकते हैं। ये 'द्वितीयक उपभोक्ता' कहलाते हैं और पोषण स्तर में

भारत में कृषि

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की 50 प्रतिशत से अधिक आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से अपनी आजीविका प्राप्त करती है।

- 1950-51 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कृषि का योगदान जहाँ 52 प्रतिशत था, वहीं 2017-18 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार कृषि एवं संबंधित क्षेत्र का योगदान 17 प्रतिशत के करीब रह गया है।
- भारत में कुल भूमि के लगभग 60 प्रतिशत भाग पर कृषि कार्य किया जाता है।
- भारत में जोत (कृषि भूमि) की उपलब्धता के आधार पर कृषकों को निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटा गया है।

जोत	जोत का आकार	प्रतिशत
सीमांत जोत	1 हेक्टेयर से कम	67.10
छोटी जोत	1 - 2 हेक्टेयर	17.91
अर्ध-मध्यम	2 - 4 हेक्टेयर	10.04
मध्यम जोत	4 - 10 हेक्टेयर	4.25
बड़ी जोत	10 हेक्टेयर से अधिक	0.70

- भारत में क्रियाशील जोतों का औसत आकार 2010-11 के आँकड़ों के अनुसार 1.15 हेक्टेयर है।

भारत की प्रमुख फसलें

चावल (धान)

- चावल उष्णार्द्र जलवायु की खाद्य फसल है। इसकी रोपाई के लिये 25° से. से अधिक तापमान, ऐसी मृदाएँ जिनकी जल-धारण क्षमता अधिक होती है। जैसे- जलोढ़क मृदा एवं 100 से.मी. से अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
- यह भारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण फसल है, जिसका कुल खाद्यान्न उत्पादन में 43 प्रतिशत हिस्सा है।
- चीन के बाद चावल उत्पादन में भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है।
- भारत में चावल उत्पादन में प. बंगाल, उत्तर प्रदेश, (धान की खेती के अंतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र) तथा पंजाब अग्रणी राज्य हैं।

दक्षिणी राज्यों तथा पश्चिम बंगाल में जलवायु अनुकूलता के कारण एक कृषि वर्ष में चावल की दो या तीन फसलें बोई जाती हैं, परंतु

हिमालय तथा देश के उत्तर पश्चिम भागों में यह दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु में उगाई जाती है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में चावल की इन फसलों को भिन्न-भिन्न नाम से जानते हैं-

राज्य	शरद ऋतु	शीत ऋतु	ग्रीष्म ऋतु
पश्चिम बंगाल	ऑस	अमन	बोरो
असम	अहू	सली	बोरो
ओडिशा	बियाली	सरद	डलुआ
बिहार	भदई	अगहनी	गरमा
केरल	विरूपु	मुंदकन	पुंजा
तमिलनाडु	कुरुवई/ सोर्नावरी	सांबा/थलाड़ी	नवराई

धान की प्रमुख किस्में

जया, साकेत, पूसा, सुगंधा, गोविंद, कावेरी, माही सुगंधा, रतना, सरजू, पूरग-33, लूनीश्री आदि।

गेहूँ

- यह शीतोष्ण जलवायु की खाद्य फसल है। इसकी बोआई के लिये उपजाऊ बलुई मृदा, 10° से 15° से. तापमान एवं 50 सेमी. तक वार्षिक वर्षा आवश्यक है।
- भारत में गेहूँ उत्पादन में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा पंजाब अग्रणी राज्य हैं।
- विश्व में गेहूँ उत्पादन में भारत चीन के बाद दूसरे स्थान पर है।

गेहूँ की प्रमुख किस्में

- लर्मा-रोजो, सोनारा-64, मैकोरानी, VL-829, H.S-420, H.S-355

मक्का

- मक्का अर्द्ध शुष्क जलवायु की खाद्य एवं चारा फसल है, जिसे 'अनाजों की रानी' के नाम से जाना जाता है। इसकी खेती के लिये 18° - 27° से. तापमान, उच्च जलधारण क्षमता युक्त मृदा, 50 सेमी. से 100 सेमी. वर्षा तथा पालारहित मौसम उपयुक्त है। यह रबी, खरीफ एवं जायद तीनों ऋतुओं की फसल है।
- भारत में महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़ आदि मक्का के प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। अमेरिका विश्व में सबसे बड़ा मक्का उत्पादक देश है।

क्रिकेट

- क्रिकेट की शुरुआत इंग्लैंड में हुई थी। दुनिया का पहला क्रिकेट क्लब 1760 के दशक में हैंबलडन में बना।
- पहला टेस्ट मैच 1877 ई. में मेलबर्न में इंग्लैंड तथा ऑस्ट्रेलिया के बीच तथा पहला एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच 1971 ई. में इंग्लैंड तथा ऑस्ट्रेलिया के बीच मेलबर्न में आयोजित किया गया था।
- अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल (ICC) क्रिकेट की सर्वोच्च संस्था है, जिसका मुख्यालय दुबई (UAE) में है। जबकि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) भारत में क्रिकेट से संबंधित सर्वोच्च संस्था है।
- भारत में क्रिकेट की शुरुआत अंग्रेजों द्वारा 18वीं सदी में हुई। भारत ने पहला आधिकारिक मैच इंग्लैंड के विरुद्ध 1932 ई. में खेला।
- भारत में रणजी ट्रॉफी की शुरुआत 1934 में हुई।

शब्दावली

एशेज, विकेट कीपर, फील्डर, एल.बी.डब्ल्यू, रबर, बेल्लस, बैट, डेड बॉल, सिंग, फाइन लेग, हिट विकेट, मेडन, थ्रो, स्क्वायर लेग, सिंग कवर, स्ट्रोक, मिड ऑन, मिड विकेट, ऑफ स्पिनर, चाइना मैन, बैट्समैन, बॉलर, लॉग ऑफ, थर्ड मैन, लॉग ऑन, सिली प्वाइंट, कवर प्वाइंट, शॉर्ट पिच, राउंड द विकेट, स्लिप, हुक, रन आउट, पॉपिंग क्रीज, छक्का, चौका, कैच, गली, ओवर थ्रो, लेग स्पिनर, ओवर द विकेट, वाइड, फ्री हिट, डकवर्थ लुइस, सुपर ओवर, फॉलोआन, पैड आदि।

- खिलाड़ियों की संख्या-11

परिमाण

पिच की लंबाई- 22 गज (20.12 मीटर)

गेंद का भार- 155.9-163 ग्राम

(बल्ले) बैट की लंबाई- 96.52 सेमी (38 इंच) अधिकतम

बल्ले की चौड़ाई- 10.8 सेमी (4.25 इंच अधिकतम)

स्टंप की लंबाई- 71.12 सेमी

- 'सैलक्स परप्परिया' [Salix Alba Caerulea (Cricket Bat Willow)] लकड़ी द्वारा क्रिकेट के बल्ले का निर्माण किया जाता है। विलो (Willow) पेड़ की लकड़ी का प्रयोग सर्वोत्कृष्ट बल्ले के निर्माण हेतु किया जाता है।

संबंधित कप/ट्रॉफी

रणजी ट्रॉफी, ईरानी कप, दिलीप ट्रॉफी, कूच बिहार ट्रॉफी, सी.के. नायडू ट्रॉफी, देवधर ट्रॉफी, जे.के. बोस ट्रॉफी, शीशमहल ट्रॉफी, मोइनुद्दीन गोल्लड कप, विजय हजारे ट्रॉफी, विजय मर्चेंट ट्रॉफी, जी.डी. बिड़ला ट्रॉफी, रानी झाँसी ट्रॉफी (महिला क्रिकेट)।

ICC T20 विश्वकप			
वर्ष	आयोजक देश	विजेता	उपविजेता
2007	द. अफ्रीका	भारत	पाकिस्तान
2009	इंग्लैंड	पाकिस्तान	श्रीलंका
2010	वेस्टइंडीज	इंग्लैंड	ऑस्ट्रेलिया
2012	श्रीलंका	वेस्टइंडीज	श्रीलंका
2014	बांग्लादेश	श्रीलंका	भारत
2016	भारत	वेस्टइंडीज	इंग्लैंड

नोट: ICC T20 विश्वकप का सातवाँ संस्करण 2020 में ऑस्ट्रेलिया में होना प्रस्तावित है।

ICC क्रिकेट विश्वकप			
वर्ष	आयोजक देश	विजेता	उपविजेता
1975	इंग्लैंड	वेस्टइंडीज	ऑस्ट्रेलिया
1979	इंग्लैंड	वेस्टइंडीज	इंग्लैंड
1983	इंग्लैंड	भारत	वेस्टइंडीज
1987	भारत एवं पाकिस्तान	ऑस्ट्रेलिया	इंग्लैंड
1992	ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड	पाकिस्तान	इंग्लैंड
1996	भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान	श्रीलंका	ऑस्ट्रेलिया
1999	इंग्लैंड	ऑस्ट्रेलिया	पाकिस्तान
2003	दक्षिण अफ्रीका, जिंबाब्वे, केन्या	ऑस्ट्रेलिया	भारत
2007	वेस्टइंडीज	ऑस्ट्रेलिया	श्रीलंका
2011	भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश	भारत	श्रीलंका
2015	ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड	ऑस्ट्रेलिया	न्यूजीलैंड
2019	इंग्लैंड	इंग्लैंड	न्यूजीलैंड
2023	भारत	-	प्रस्तावित

प्रमुख तथ्य: एक नज़र में

भारत में प्रथम

- प्रथम परमाणु रिएक्टर - अप्सरा
- प्रथम परमाणु पनडुब्बी - आई.एन.एस चक्र
- प्रथम पनडुब्बी - आई.एन.एस कलवरी
- प्रथम विमानवाहक पोत - आई.एन.एस विक्रांत
- प्रथम मध्यम दूरी वाली मिसाइल - अग्नि
- प्रथम मिसाइल - पृथ्वी
- प्रथम आणविक केंद्र - तारापुर
- प्रथम समाचार-पत्र - बंगाल गजट (1780)
- प्रथम विश्वविद्यालय - नालंदा विश्वविद्यालय
- प्रथम दूरदर्शन केंद्र - नई दिल्ली (1959)
- पहली मूक फिल्म - राजा हरिश्चंद्र [निर्माता-दादासाहब फाल्के (1913)]
- प्रथम बोलती फिल्म - आलम आरा (आर्देशिर ईरानी-1931)
- देश में पहली बार दूरदर्शन में रंगीन कार्यक्रमों का प्रसारण - 15 अगस्त, 1982
- पहली टेक्नीकलर फिल्म - झाँसी की रानी (1950)
- पहली 3-डी फिल्म - माई डियर कुट्टीचातन (1984)
- प्रथम प्रायोजित सीरियल - हम लोग (1984)
- प्रथम एशियाई खेल का आयोजन - दिल्ली (1951)
- प्रथम खुला (Open) विश्वविद्यालय - डॉ. बी.आर. अंबेडकर ओपेन यूनिवर्सिटी (तेलंगाणा)
- प्रथम हाई स्पीड ग्रामीण ब्रॉड बैंड नेटवर्क की स्थापना - इडुक्की (केरल)

भारत में प्रथम (महिला)

- प्रथम महिला राष्ट्रपति - प्रतिभा देवी सिंह पाटिल
- प्रथम महिला प्रधानमंत्री - इंदिरा गांधी
- प्रथम महिला लोकसभा अध्यक्ष - मीरा कुमार

- प्रथम महिला राज्यसभा-उपसभापति - वाँयलेट हरि अल्वा
- प्रथम महिला राज्यपाल - सरोजनी नायडू (उ.प्र.)
- प्रथम महिला सांसद - राधाबाई सुब्रायन
- यूपीएससी की प्रथम महिला अध्यक्ष - रोजे मिलियन बैथ्यू
- प्रथम महिला शासिका - रजिया सुल्तान
- प्रथम महिला मुख्यमंत्री - सुचेता कृपलानी (उ.प्र.)
- प्रथम महिला केंद्रीय मंत्री - राजकुमारी अमृत कौर
- प्रथम महिला कॉन्ग्रेस अध्यक्ष - एनी बेसेंट
- संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रथम महिला भारतीय राजदूत - विजयलक्ष्मी पंडित
- सुप्रीम कोर्ट की प्रथम महिला न्यायाधीश - मीरा साहिब फातिमा बीवी
- उच्च न्यायालय की प्रथम महिला मुख्य न्यायाधीश - लीला सेठ (हि.प्र.)
- प्रथम महिला सत्र न्यायाधीश - अन्ना चांडी (केरल)
- प्रथम महिला आई.ए.एस - अन्ना जॉर्ज
- प्रथम महिला आई.पी.एस - किरण बेदी
- अशोक चक्र पाने वाली प्रथम महिला - नीरजा भनोट
- नोबेल पुरस्कार पाने वाली प्रथम भारतीय महिला - मदर टेरेसा
- मिस वर्ल्ड बनने वाली प्रथम भारतीय महिला - रीता फारिया पावेल
- एवरेस्ट पर पहुँचने वाली पहली महिला - बछेंद्री पाल
- दो बार एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने वाली प्रथम महिला - संतोष यादव
- मिस यूनिवर्स बनने वाली प्रथम भारतीय महिला - सुष्मिता सेन
- 'भारतरत्न' प्राप्त करने वाली प्रथम महिला - इंदिरा गांधी
- ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाली प्रथम महिला - आशापूर्णा देवी

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सिविल सेवा और राज्य सेवा (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, झारखंड पी.सी.एस.) परीक्षाओं की पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(33 + 10 बुकलेट्स) (₹15,500/-)

सामान्य अध्ययन

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(33 बुकलेट्स) (₹14,000/-)

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(28 + 8 बुकलेट्स) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(28 बुकलेट्स) (₹10,000/-)

उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(28 + 8 बुकलेट्स) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(28 बुकलेट्स) (₹10,000/-)

छत्तीसगढ़ पी.सी.एस. (CGPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(35 + 6 बुकलेट्स) (₹15,500/-)

सामान्य अध्ययन

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(35 बुकलेट्स) (₹14,000/-)

राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS) के लिये

सामान्य अध्ययन

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(34 बुकलेट्स) ₹10,500/-

बिहार पी.सी.एस. (BPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(25 बुकलेट्स) ₹10,000/-

For UPSC CSE (in English Medium) : For UPPCS Mains (in English Medium)
Self Learning Modules Self Learning Modules

Students may opt for following modules

Prelims (17 GS + 3 CSAT Booklets) ₹10000/-

Mains (18 GS Booklets) ₹11000/-

Prelims + Mains (33 GS + 3 CSAT Booklets) ₹15000/-

Offer: Free 6 months subscription of Drishti Current Affairs Today magazine with every module

19 GS + 1 Essay +
1 Compulsory Hindi Booklets
₹11000/-

Offer: Free 6 months subscription of Drishti Current Affairs Today magazine for comprehensive coverage of current affairs

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन

(प्रारंभिक परीक्षा)

(19 बुकलेट्स) ₹10,000/-

सामान्य अध्ययन

(मुख्य परीक्षा)

(26 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट

(प्रारंभिक परीक्षा)

(27 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(31 बुकलेट्स) ₹15,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट

(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)

(39 बुकलेट्स) ₹17,500/-

इतिहास

(वैकल्पिक विषय)

(12 बुकलेट्स) ₹7,000/-

दर्शनशास्त्र

(वैकल्पिक विषय)

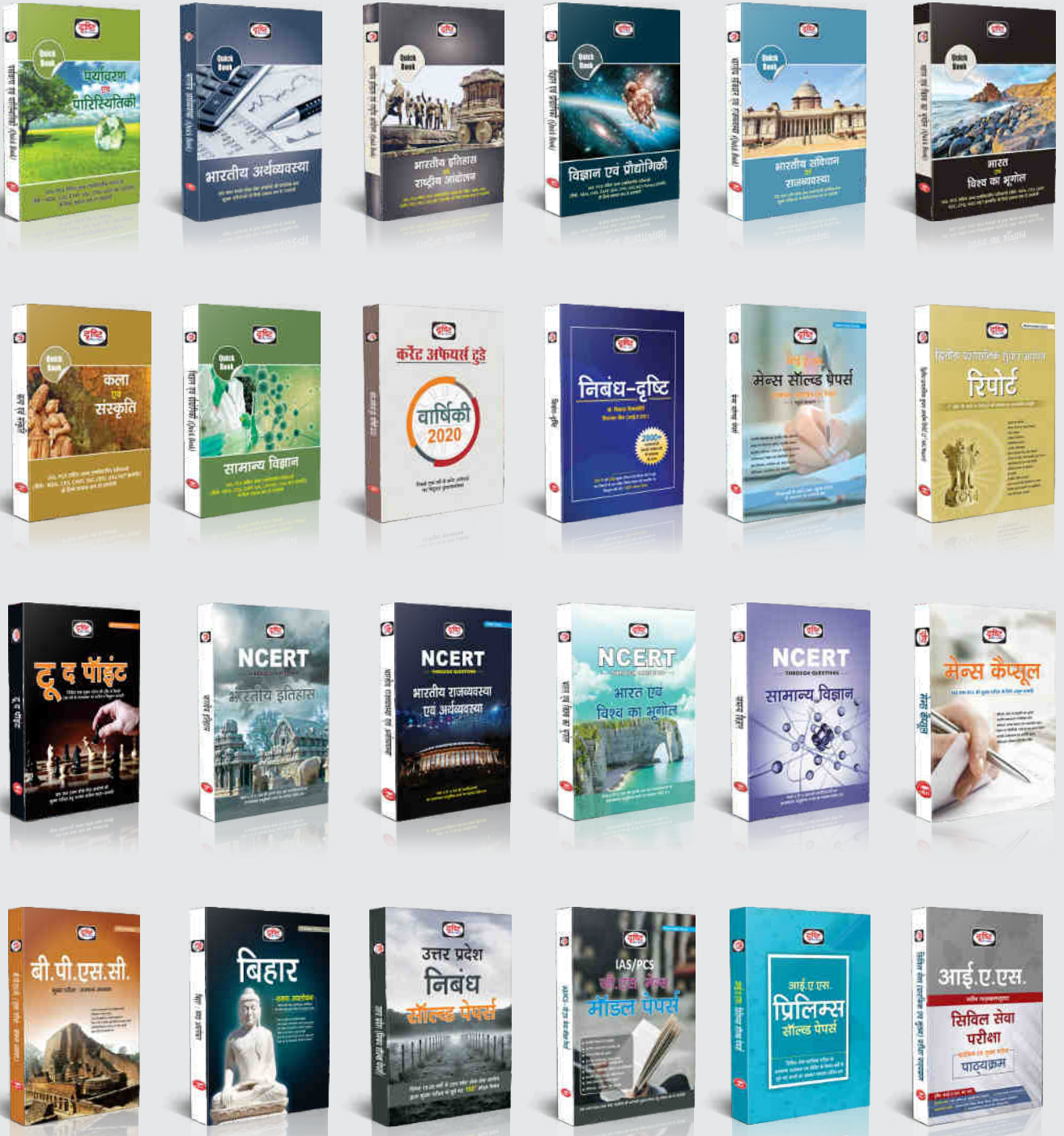
(4 बुकलेट्स) ₹5,000/-

हिन्दी साहित्य

(वैकल्पिक विषय)

(13 बुकलेट्स) ₹7,000/-

दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें



641, 1st Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-9

Ph.: 011-47532596, 87501 87501

Website: www.drishtipublications.com, www.drishtias.com

E-mail: info@drishtipublications.com

ISBN 978-81-934662-7-8



मूल्य : ₹ 230